AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में ऐतिहासिक पुनरुत्थान का प्रश्न

Neeraj Kumar
Research Scholar
Hindi Department University of Delhi
Dr. (Prof) Gyantosh Kumar Jha
Principal
ARSD College University of Delhi

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

जयशंकर प्रसाद (30 जनवरी, 1889 से 15 नवंबर, 1937) हिन्दी साहित्य के अग्रणी रचनाकार है। उन्होंने हिन्दी साहित्य के लगभग सभी विधाओं में रचनाएँ की हैं। हिन्दी नाटक को साहित्यिक उत्कर्ष तक ले जाने में उनकी विशेष भूमिका रही। उनके लेखन की बहुलता और रचनाओं की प्रासंगिकता के कारण ही नाट्य साहित्य का काल-विभाजन उनके नाम पर प्रसाद-पूर्व, प्रसाद युगीन और प्रसादोत्तर के रूप में किया जाता है।

प्रसाद का लेखन काल 1900 ई. से 1937 ई. रहा। यह भारतीय समाज में ऐतिहासिक उत्थल-पुत्थल का समय था। भारतीय जनमानस में अंग्रेजों की नीतियों से अपने आप को आजाद करने की इच्छा पनपने लगी थी। इन इच्छाओं को समाज से व्यापक जुड़ाव के लिए अलग-अलग लोग अलग-अलग माध्यम अपना रहे थे। राजनीतिक दबाव भले ही अग्रणी माध्यम था, इसके बावजूद कला, साहित्य, पत्रकारिता के जरिये भी लोग समाज को जागृत करने की ओर आगे बढ़ रहे थे। प्रसाद ने साहित्य के माध्यम से जनजागरण का तरीका अपनाया। उनकी रचनाएँ लोगों के मन-मस्तिष्क में संवेदनाओं का संचार करती थी। वे भारत के लोगों में व्याप्त अंग्रेजी व्यवस्था की वर्चस्ववादी नीतियों

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

और वाईट सुपरिमेसी के बरक्स जनमानस में सदियों से आ रहे प्रतिकों के माध्यम से अपने अतीत के गौरव को महसूस करने की प्रणाली अपनाई। उन्होंने इसके लिए अपनी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों और नाटकों में ऐतिहासिक-पौराणिक पात्रों को विषयानुसार उठाया। प्रसाद 'विशाख' की भूमिका में लिखते हैं- "इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संघटित करने के लिए अत्यंत लाभदायक होता है.... क्योंकि हमारी गिरी दशा को उठाने के लिए हमारी जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं इसमें मुझे पूर्ण संदेह है।.... मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत प्रयत्न किया।"[1] प्रसाद ने खुद माना है कि वे अपने नाटकों के पात्र और कथानकों के जरिये वर्तमान समय के लोगों के बीच एक आदर्श नायक के भूमिका और नेतृत्व क्षमता वाले लोगों को देश के लिए संघर्ष की योजना क्रियान्वित हो सके। साहित्य और कला का क्या उद्देश्य है यही न कि समाज जागृत हो, आगे बढ़े और निरंतर बेहतर की स्थिति की ओर समाज जाये। प्रसाद ने नाटक के जरिये उन्हीं आदर्शों को उकेड़ने का प्रयास किया है।

ऐतिहासिक पुनरुत्थान का प्रश्न इस तरह से भी विशेष हो जाता है कि तात्कालिक समाज को किस प्रकार की विषय-वस्तु की जरूरत है। उस समय का समाज आजादी के लिए संघर्षरत था। प्रसाद के अधिकांश पात्र भी आजादी के अनेकानेक रूपों में संघर्षरत नजर आते हैं। इस बारे में दशरथ ओझा लिखते हैं- "प्रसादजी ने राज-क्रान्ति, धर्म-क्रान्ति, समाज-क्रान्ति और नारी-क्रान्ति का चित्रण 'अजातशत्रु' में सफलता के साथ किया है।"[2] अर्थात यह देखा जा सकता है कि प्रसाद ने समाज में व्याप्त कई चुनौतियों को समाज के सामने जनमानस में सवाल के तौर पर उठाए वह चाहे राजनीतिक सूझ-बुझ,

[1] विशाख की भूमिका से

[2] हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास - डॉ दशरथ ओझा, पृष्ठ सं- 194

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

नैतिकता-अनैतिकता का सवाल हो या धार्मिक विभेद-मनभेद, या सामाजिक दायरे की बात जिसमें स्त्रियॉं के बारे में जाहीर नैतिकताओं के कारण शोषण की प्रक्रिया। इन सभी सवालों को ऐतिहासिक पात्रों के साथ उन्होंने पिरोकर पेश किया।

प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में प्रमुख तीन नाटक- 'स्कंदगुप्त', 'चन्द्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' भारतीय इतिहास, कला और संस्कृति के दृष्टिकोण से स्वर्ण युग गुप्तकाल और मौर्यकाल के इतिहास पर आधारित है। ये नाटककार की प्रौढ़ रचनाएँ मानी जाती है। जिसके बारे में बच्चन सिंह लिखते हैं- "इन तीनों में भी 'स्कंदगुप्त' अपने लंबे नाटकीय तनाव, संघर्ष और बुनावट में अप्रतिम है। इसके नायक स्कंदगुप्त में राग-विराग, जय-पराजय, अवसाद-उत्साह का अद्भुत मिश्रण है। उसे अनेक मोर्चो पर लड़ना पड़ता है- घरेलू कलह के मोर्चे पर, देशद्रोहियों के मोर्चे पर, बाह्य आक्रमणकारियों के मोर्चे पर। इन मोर्चे के साथ उसका भी अपना एक मोर्चा है- अस्तित्वमूलक वैराग्य और अकेलापन। युद्ध की इन अगनियों में तपकर ही उसका व्यक्तित्व निखरता है। अधिकार से उदासीन किन्तु कर्तव्य के प्रति सजग। तत्कालीन घटनाचक्रों को अपने वर्तमानकालीन परिवेश से संयुक्त करते हुए प्रसाद ने उन्हें स्कंदगुप्त के मानस का अनिवार्य अंग बना दिया है।"[3] ये वही मानसिक भावनाएं हैं जिसे नाटककार ने अपने समय के अनुकूल पाया और समाज में इस तरह के मानसिक भाव का विस्तार हो सके, जिसके लिए ऐतिहासिक पात्र गढ़े।

आजादी की लड़ाई में समाज के हर वर्ग की उचित भागीदारी हो सके इसके लिए स्वतन्त्रता सेनानियों ने अहम भूमिका निभाई; इसके बावजूद देश की आधी आबादी इससे नहीं जुड़ पाई। गांधीजी और कस्तूरबा ने अपने नेतृत्व में महिलाओं को स्वतन्त्रता आंदोलन में जुडने का आह्वान किया। इस स्थिति में उनका सहयोग विभिन्न साहित्यकारों ने निभाया, जिसके लिए उन्होंने कई स्त्री चरित्र को लोगों

[3] हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ बच्चन सिंह, पृष्ठ संख्या- 368-369

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

के बीच लाये। प्रसाद ने ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से स्वतन्त्रता आंदोलन में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में सक्षम स्त्री पात्रों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। यही प्रयास ध्रुवस्वामिनी, कार्नेलिया, देवसेना, अलका आदि पात्रों के माध्यम से समाज में स्त्री नेतृत्व की परिकल्पना रखी। दशरथ ओझा इन पात्रों के बारे में 'स्कंदगुप्त' नाटक पर विचार करते हुए लिखते हैं- "इसमें पुरुष की पाठ-प्रदर्शिका प्रायः नारी ही है। रामा शर्वनाग को, कमला भट्टार्क को सत्पथ दिखाती है। देवसेना स्कंदगुप्त को क्षणिक दुर्बलता से ऊपर उठाती है। मानव की कोमल कल्पनाओं तथा सत्प्रवृत्तियों की साक्षात मूर्ति देवसेना नारी जाति को गौरवान्वित करनेवाली है। नाट्य साहित्य में इतनी उच्च कल्पना प्रसाद की सबसे बड़ी देन है।"[4] इन्हीं कल्पनाओं ने स्त्री नेतृत्व को प्राथमिकता से आगे बढ़ाने की सामाजिक स्थिति को साहित्य मेन स्थापित की।

चाणक्य प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' में एक अहम किरदार के रूप में नजर आते हैं जो भारतीय बौद्धिक समाज को युवाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास में सहयोगी भूमिका निभाते हुए दिखाई देते हैं। महेश आनंद अपनी पुस्तक 'जयशंकर प्रसाद : रंगदृष्टि' में लिखते हैं- "एक तरह से 'चन्द्रगुप्त' चाणक्य का नाटक है। वह एक गतिशील पात्र है, जो किसी भी अभिनेता के लिए चुनौती बन सकता है। चाणक्य का प्रत्येक व्यवहार नाटक के उद्देश्य की कई परतें खोलता है। व्यक्ति एवं राजनीतिक परिस्थितियों को सूक्ष्म दृष्टि तथा अखंड भारत की परिकल्पना के लिए उसकी संघटन-शक्ति प्रत्येक संघर्ष का सूत्रपात करती है। उसके समस्त कार्य-व्यापार एवं आंतरिक अनुशासन से प्रत्येक घटना तथा पात्र नियंत्रित होता है। कर्मवाद की महत्ता रेखांकित करने वाला चाणक्य, सबकुछ उपलब्ध होते हुए भी, निर्लिप्त रहता है। उसकी अटूट संकल्प-शक्ति और दूरदृष्टि उसे व्यक्तिगत प्रतिशोध से ऊपर उठाकर राष्ट्रहित से जोड़ती है

[4] हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास - डॉ दशरथ ओझा, पृष्ठ सं- 213

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

।"[5] प्रसादकालीन समय और परिस्थितियाँ निर्लिप्त भाव से ऊपर उठ व्यक्तिगत स्वार्थों को त्याग राष्ट्रहित में नेतृत्व करने वाले योग्य चाणक्य की तलाश है जिसे यह नाटक भारतीय जनमानस को अपने अंदर झांक कर राष्ट्र के लिए कुछ कर मिटने की मांग पर बल देता है । पूर्ववर्ती राष्ट्रव्यापी नेतृत्वकारी जननायकों की कमी को इस समय के साहित्य, कलाओं में अनायास देखा जा सकता है और इतिहास के सत्तर-पचहत्तर साल पहले झाँका जाये तो हम पाते हैं कि उस समय धीरे-धीरे देश के हर क्षेत्र में अलग-अलग राष्ट्र उत्थान के योद्धा तैयार हो रहे थे। जनजागरण का बिगुल हर दिशा में फाइल रहा था। पहली बार भारतवासियों के अंदर उत्थल-पुत्थल को अनायास ही रेखांकित किया जा सकता है। क्या कहा नहीं जा सकता है कि ये सब प्रभाव भारतीय मानस में नई ऊर्जा तथा अपनी यथास्थितवादी सोच से ऊबड़ने की छटपटाहट को नहीं अंकित करती है। यह सब उस युग की आवश्यकता थी या खुद को आत्मनिर्भर, स्वतंत्र घोषित करने की जद्दोजहद परंतु ये सारे प्रभाव देशहित में सकारात्मक थे, जिसने तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक व नैतिक परिस्थिति से लोहा लिया और डार्विनवादी सोच, जिसमें वाईट सुपरिमेसी की वैश्विक छवि थी उसका लोहा लिया और केवल भारतीय स्वतन्त्रता का आगाज नहीं हुआ एशिया और अफ्रीका के कई देश भी भारत से प्रेरित हो अपनी आजादी की राह की ओर प्रसस्त हुए।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नाटककार जयशंकर प्रसाद अपनी नाटकों में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का आधार केवल कथावस्तु के चयन के लिए नहीं करते हैं। वे अपनी नाटकों के माध्यम से जनसरोकारों को एक नया आधार देना चाहते हैं जिसमें पाठक और दर्शक अपने अंदर अपनी सामाजिक स्थितियों का मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास कर सके और ज्यादा नहीं तो अपने अतीत से ही इसका मूल्यांकन करें कि जो भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ हमारे बीच व्याप्त है उसमें

[5] जयशंकर प्रसाद : रंगदृष्टि / नाटक के लिए रंगमंच - महेश आनंद, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली, संस्करण-2010, पृष्ठ सं- 163

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

कोई गिरावट तो नहीं आई है। क्या हम उसे उतने ही मानक पर रख पाये हैं ? क्या हमारी जिम्मेवारी नहीं बनती की इसमें सुधार की जाए। इन्हीं सुधारों की महत्वाकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए जयशंकर प्रसाद सारिके नाटककारों ने अपनी नाट्य रचनाओं की विषय-वस्तु ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनाई और उसका सफलतापूर्वक प्रकाशन किया।

शोधार्थी

नीरज कुमार

हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

*****